

Handwritten red ink markings, possibly a signature or initials.

आशा भोंसले
618
ASHA ARCHIVES

ॐ नमः श्रीचक्रसम्बराय॥ ॥ श्रीचक्रसम्बरायानि न न
मस्कार॥ ॐ आः हं श्रीमद्वज्रसत्त्वगुरुवरचरणाकमला
यः सम्पद्ज्ञानावभासनकराय नमो हं नमस्ते सु नमो नमः भ
क्ताहं त्वानमस्यामि गुरोनाथ प्रसीद मे॥ ॥ श्रीशोभासंयुक्त
जुयाविज्याकलः श्रीवज्रसत्त्वउत्तमगुरु भिंगुज्ञानप्रकाश
यानाविज्याकलया चरणाकमले जिनं नमस्कार हेनाथ हेगुरु
भक्ति भावनं जिनं छलपोलयात नमस्कारयाना जिउउप
रे छलपोल प्रसन्नजुयाविज्यायमात॥ ॥ वन्दे भवाब्धि
संमयं संतारिणी यतीशयं॥ सङ्कुरु यत्प्रसादेन ममायं ज्ञान
संभवं॥ श्रीमते वज्रडाकाय डाकिनी चक्रवर्तिनी॥ पंचज्ञानत्रि
कायामत्राणाय जगतो नमः॥ यावन्तो वज्रडाकिन्यः छिन्नसंक
ल्पवधनाः॥ लोकाकल्पप्रवर्तिन्यस्तावतीभ्यो नमः सदा॥ x॥
संसाररूपीसमुद्रेडुनाचंपित धक्यारक्षायानाविज्याकल
यतीश्वर सङ्कुरुयातजिनं नमस्कार गुल्लपोलया प्रसादं
जितं जोगुज्ञान उत्पत्तियानाविज्याकल श्रीमान् वज्रडाक
नपागत डाकिनी चक्रे विज्याकल न्यागुज्ञानस्वरूपजुया
स्वंगुशरीरधरेयाना जगत्संसारयात रक्षायानाविज्याक
ल छलपोलयात जिनं नमस्कार॥ गुलितक वज्रडाकिनी ग
रापि संकल्परूपी वधनागारं द्युतेयानाविज्याकपि लोक

गरापिनी यायमायु कार्यं अवर्तनायाना विज्याकपिं उधपिं
 सकलयातजिनं नमस्कार॥ ५॥ ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्मा
 रां स्वभावशुद्धोहं शून्यता ज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहं ॥ ५॥
 ॐ आः हं रुटित्वाकारेण शून्यतां भावयेत् ॥ श्रीकारमद्वयज्ञा
 नं हेकारहेतुवर्जितं ॥ रुकाररूपनासार्थं ककारे न कचिच्छि
 तं ॥ ॐ सर्वसत्त्वोद्धरणहेतोः शुक्लवर्णादिभुजसम्बरमात्मानं भा
 वयेत् ॥ ५॥ ॥ पलरुनं शून्यता भालये श्रीकारध्याय नि
 गुमउगु ज्ञान हेकारध्याय हेतुमउगु रुकारध्याय रु
 पमउगु ककारध्याय गनं हे मच्चंगु ॥ सकलसत्त्वप्राप्तां
 गरापिं उच्चारयाययाकारो लुपुवर्णा निकालाहधरेया
 नाविज्याकसु संवरयाआत्मा भावयाये ॥ ५॥ ॥ तदनुकर
 शोधन दक्षिणाहस्ते अकारेण चन्द्रमणुलं वामहस्ते आ का
 रेण सूर्यमणुलं ॥ ५॥ ॥ धनंली हस्तशोधन जवगुलाहती
 अकारेण चन्द्रमणुल देवागुलाहती आकारेण सूर्यमणु
 ल ॥ ५॥ जवे ॥ ॐ हं चोला ॥ नमहि दधुला ॥ स्वाहाहं अं
 गुला ॥ श्लोषहे चला ॥ हं हं हो सला ॥ फूफूफूफू पृचिचका
 दक्कं ॥ ॥ देपास ॥ ॐ वं चला ॥ होयों दधुला ॥ होमों अं गु
 ला ॥ हेहों चला ॥ हं हं हो सला ॥ फूफूफूफू पृचिचकादक्कं ॥
 ॥ ५॥ ॐ हं स्वाहा ॥ वज्र ॥ ॐ हो स्वाहा ॥ यरा ॥ वज्रसत्त्वसंज्ञ

हान् वज्ररत्नमनुत्तरं वज्रधर्मगायिने वज्रकर्मकुलोद्भव ॥ ॥
 ॐ तर्कितं हं ३ तर्कितं राजहो ॥ ॥ कमलावर्तने शंखाधिष्ठान ॥
 ॥ ॐ श्रीवज्र हे हे रु रु क हं हं फ ह् डा कि नी जाल स स्वरं स्वा हा ॥ ॥
 पंचोपचार पूजा प्रोक्षणा ॥ ॐ स्वगुरो हे हं फ ह् ॥ ॐ स्वगुरो हे स
 र्वविघ्नान्सारय हं ॥ गन्ध ॥ ॐ वज्रगन्धे स्वाहा ॥ पुष्प ॥ ॐ वज्र
 पुष्पे स्वाहा ॥ धूप ॥ ॐ वज्रधूपे स्वाहा ॥ दीप ॥ ॐ वज्रदीपे स्वाहा ॥
 नैवेद्य ॥ ॐ वज्रनैवेद्ये स्वाहा ॥ लाजाञ्जल ॥ ॐ वज्रलाजाक्षता
 यस्वाहा ॥ ॥ ॥ स्वानजाकिलं रवसधुना वलिसतय ॥ ॐ अर
 कारे मुख सर्व धर्माणा मायुत्पन्नत्वात् ॐ आः हं फ ह् स्वाहा ॥ ॥
 वलि अधिस्थान ॥ ॐ सुप्रतिष्ठित वज्रे स्वाहा ॥ ॥ मण्डलाधि
 स्थान ॥ ॐ आः हं ॥ मंत्रशोधन ॥ ॐ ह हो ह्रीं अरं स्वाहा ॥ ॥ पा
 त्रशोधन ॥ पुनः पात्रशुद्धतां भावयेत् ॥ ह्रीं कारेण पद्मभाजनं
 मां कारेण मामकी कृष्णादिभुजा वज्रवज्रहस्ता हं कारेण अ
 क्षोभ्यः कृष्णदिभुजं वज्रहस्तं तत्संयुटयोगेन महारागद्र
 वीभूतं पश्येत् ॥ ॥ ॥ हनं पात्र शुद्धतां भालपे ॥ ह्रीं कारनं प
 द्मभाजनं मां कारनं मामकी कृष्णवर्णा निकाला हा वज्र
 ज्वनाच्च ॥ हं कारणं अक्षोभ्यः कृष्णवर्णा निकाला हातिनं
 वज्रज्वनाच्च ॥ ॥ ॥ उपिनिष्ठस्या संयुटयोगं महारागद्रवज्र
 मुखने ॥ ॥ पुनः ह हो ह्रीं अरं स्वाहा ॥ ॐ सर्वभक्षकामिनी

सर्वभक्षशोधनी गृह्यवज्रिणी नो धेश्वरी सर्वद्रव्य व्यापिनी शो
 धय रहें ॥ हकार हर ते वर्ण होकार गन्धनाशन ॥ होकार बीज हं
 तात्र अकारेणा मृते अमृतं प्रवेशयेत् ॥ ५ ॥ तेन वामहस्ते सं
 प्रक्षयित्वा त्रिअंगुलि पताक हस्तेन भूमि अधिष्ठानं ॥ ॐ वज्रभू
 मे हं ॥ ॥ भुक्तिं देवालाहती हाहायाना अंगुपचिनं भूमि अ
 धिष्ठान याय ॥ ॥ चतुर्विंशति अंग न्यास ॥ पुं शिर ॥ जां
 चसुष्मा ॥ ॐ जव हापं ॥ आं लिक्षो ॥ गों दे पा हापं ॥ रां हा ति ॥
 दे मिखा ॥ मां वो ह ॥ कां वको ॥ ॐ डुरु ॥ त्रिं त्यक् ॥ को हा सा
 कं सु तु ॥ लं कण्ठ ॥ कां हृदय ॥ हो कासि ॥ प्रें नाज ॥ गुं र्वा
 घा ॥ सों ता हा ॥ सुं खपा ॥ नं पौलिपचिं ॥ सिं पालित ॥ मं ला हा
 पचिं ॥ ऊं पुलि ॥ ॥ ॐ पीठो पपीठ ॥ क्षेत्रो पक्षेत्र द्यो प
 छंद मेला पको पमेला पक श्म शानो प श्म शानानि इति चर्य ॥
 ततः अंग न्यास ॥ ॥ ॐ हं हृदये निमहि शिरसि ॥ स्वा हा हं
 शिरसायां ॥ वो ष हं स्कन्ध द्वयोः ॥ हं हं हो नेत्र द्वयोः ॥ फु हं
 हं सर्वाङ्गे ॥ ॥ भुक्ति जवं ॥ ॥ ॐ वं नाभौ ॥ हां यां हृदये ॥ हो
 मां वक्त्रे ॥ हं हो शिरसि ॥ हं हं शिरसायां ॥ फु हं हं सर्वाङ्गे ॥
 भुक्ति देवां ॥ ॥ आसन ॥ ॐ स्थान मे रक्ष हं ॥ वो हु नि रवं ॥ ॐ
 जोग मे रक्ष हं ॥ आत्मानं मे रक्ष हं ॥ ॥ ततः स्वहृदये अका
 रेणा चन्द्रमण्डलोपरि कृत्वा हंकारं आकारं रक्तं ॐ कारं शुक्लं

हंकारानं आलिकालिपंक्तित्रयः शुक्ल-रक्त-कृष्ण-वर्णः
मुच्चार्य नदक्षरपरिणतं चक्र-पद्म-वज्र-वाक्विशुद्धिक्रियात् ॥

॥ धनंति भवगुहदये अकारनं चक्रमण्डलया शोनेक
स्वर्णं हंकारः आकारः रक्तवर्णं करुणं उंकारः शुक्लवर्णं शिरे
हंकारं अनेकं आलिकालि-स्वंगुपंक्तिः शुक्ल-रक्त-कृष्ण-
स्वर्णं उच्चारणायानां भुगु अक्षरपरिणतजुषा चक्र-प
द्म-वज्र-भुलिवाक्विशुद्धियाये ॥ ५॥ रूपस्कन्धे वैरोचन-
वेदनास्कन्धे वज्रसूर्य ॥ संज्ञास्कन्धे पद्मनृत्तेश्वर ॥ संस्कारस्कन्धे
वज्रराज ॥ विज्ञानस्कन्धे वज्रसत्त्व ॥ सर्वतथागतत्वे श्रीहेरुकवज्र
चक्षुषोः मोहवज्री ॥ श्रोत्रयोः द्वेषवज्री ॥ घ्राणयोरीर्षा वज्री ॥
वक्त्रे गगवज्री ॥ संस्पर्शे सूर्यवज्री ॥ सर्वायतनेषु ऐश्वर्यवज्री
॥ पृथिवीधातुः पाननी ॥ अधातुः मारणी ॥ तेजोधातुः राक्षसणी ॥ वा
युधातुः पद्मनृत्तेश्वरी ॥ आकाशधातुः पद्मज्वालीनी ॥ पंचस्कन्धे
हंकारदेवता इति ॥ ॥ ततः आलिकालिपंक्तिमध्ये रंकारप
रिणतं सूर्यमण्डलं तन्मध्ये हंकारपरिणामेन भगवन्तं कृष्णव
र्णं प्रभुजं प्रथमभुजाभ्यां वज्रवज्रयष्टाधरं द्वितीयाभ्यां खड्ग
मर्जनीपाशं तृतीयाभ्यां डमरुखड्गं चतुर्मुखं मूलमुखं कृष्ण
स्व-वामेश्यामं पश्चिमेरक्तं दक्षिणोपीतं विभाव्यं हंकारं चतु
र्मुखे स्थित्वा संभादिचतुरामंत्रं तेनोत्पन्नचतुर्देव्यः काकास्या

दिक्षु विदिक्षु पूर्वोत्तरयो रशिपुंजेन यमदाद्यादि॥ दौ दौ व-
 र्णानि॥ आदौ पदेशा॥ वामहस्तस्यांगुष्ठ तर्जनीभ्यां छोटिकां दत्त्वा
 ॥ ॥ धनंति आलिकालि पंक्ति मध्ये रंकार परिणत जु-
 ग सूर्यमण्डल ध्यामध्ये हंकार परिणमजुया भगवान् उ-
 त्पत्तिजुल कक्षवर्णा खुका लाह मूलगुनिका लाहति वज्र
 घण्ड ज्वनाविज्या कलु निया गुनिका लाहति खड्ग तर्जनीपा
 श ज्वनाविज्या कलु स्वका गु लाहानिकान इमरु खदांगधरे
 याना विज्या कलु पपाखान मूलगुखा कक्षवर्णा खवे वाउं
 लिउने ह्याउं जवे सा सुवर्णा चिन्तनायाना॥ हंकार यारशि
 पपाखाले संचना सुंभ आदिं प्यंगु मंत्र शुक्ल उत्पत्ति ऊ-
 पिं प्यल देवीपिं काकास्या आदिं दिशा २ स कोरोर पूर्व उत्तरे
 रश्मियां समूहं यमदाद्यादिं निगु २ वर्णापिं देवी उत्पत्तिजुल
 ॥ देपा अंगु पाचिनं छोटिका विद्या॥ X॥ ॐ सुम्भनी सुम्भ हंर
 फद् ॥ ॐ गृह २ हंर फद् ॥ ॐ गृह मय २ हंर फद् ॥ ॐ आनय हं
 भगवन् विद्याराज हंर फद् ॥ काकास्या कक्षा॥ उलूकास्या शपामा
 श्वाना स्यारक्ता श्रुद्रास्या पीता॥ यमदाद्या कक्षपीता॥ यम
 ह्नी पीतरक्ता॥ यमदंष्ट्री रक्तशपामा॥ यम मधनी श्पा मक्ष्मा॥ X
 ॥ ॥ एता देव्याया वामहस्ते कपाल परिणामेन सुम्भराजकी
 लनं नाभेरधः श्रुद्राकारं उर्ध्वनाभे रूपकं धृत्वा दक्षिणहस्ते

करति परिणामेन वज्रसु झलहस्ता॥ तदनु आकाशे रं परिण
 न सूर्यमण्डलमध्ये हंकारेण विश्ववज्र हंकाराधिष्ठितं न
 द्रश्मिना यवफलप्रमाणां वज्रकर्णिकारूपेणाधोगतेर्वज्रम
 यभूमिविभाव्य॥ ॥ अयं देवीपिनी देपाशलाहती कपा
 लपरिणामजुया संभराजकील त्वं कुंके भूरया आकार त्व
 कुंचे रूपधरे यानाचंपिं जवरु लाहती करति परिणामजु
 या वज्रमुझल जनाचन॥ धनंति आकाशे रं कार परिणत
 जुया सूर्यमण्डलया मध्ये हंकारेण विश्ववज्र हंकारेअधि
 ष्ठानयानाचंरु अशुरश्मिं तद्ये प्रमाणा वज्र कर्णिकायारु
 पजुया के वेशतिं वज्रमयभूमिआदिंजुलधका भालपा॥ ॥
 ✕ अं मेदिनी वज्रीभव वज्रवधेहंर फट्॥ अं वज्रमाकारहं वं हं
 अं वज्रमंजुलहं पं हं॥ अं वज्रविमानहं खं हं॥ अं वज्रशरजाल
 त्रांसंजो॥ अं वज्रज्वालानलार्क हं ३॥ इतिदिग्वभन॥ ॥ आ
 कारवर्तिहंकारनिष्पन्नेषु अष्टकुसुमेषु निवेशितान् इन्द्रादि
 विष्णान् हृदये कीलकं धत्वा वज्रमुझलेनाकोटयेत्॥ ✕ ॥
 पक्षां स्वरूपं चोह पक्षस्थाने चंपिं हंकारं उत्पन्नजेशु इन्द्रा
 दिविष्णुगणया उगले कीलस्थानां मुगलं तातधका चित्त
 नायाये॥ ✕ अं अष्टपातय २ सर्व उद्यान् हं हं फट्॥ अं की
 लय २ सर्व उद्यान् हं फट्॥ अं हं ३ वज्रकीलय वज्रधरजाश

पयति सर्वविघ्नविनायकानां कायवाक् चित्तवज्रा कीलय हं
 हं फट् ॥ इति कीरणमंत्रः ॥ ॐ वज्रसुकुल वज्रकीलयमा को
 द्य २ हं फट् ॥ आकोटनमंत्रः ॥ इति निर्विघ्नभावयेत् ॥ इति रक्षा च
 क्रविधिः ॥ ततः सहृदयस्थ हंकाररश्मिमालाभिर्जग
 दर्धकृत्वा अकनिष्ठभुवनंगत्वा तत्रस्थ अनादिसंसिद्धं श्री
 हेरुकभगवतीसमापन्नं मण्डले यं पश्येत् ॥ ततः हृदीजरश्मि
 मालाभिराक्षय ज्ञानचक्रमाकाशे दृष्ट्वा अभिसुखमभिसंयु
 ज्य समंत्र समय मण्डले प्रवेशयेत् ततः समरसीकृत्य मनो
 मयभिः पूजादेवीभिश्च पूजयेत् ॥ x ॥ धनंति ध्वजं हृदये
 चंशु हंकार रश्मिमालायाकं जगत्संसारयातहितयानाः
 अकनिष्ठभुवनेवना अनादिसंसिद्धजुया विज्याकसु श्रीहे
 रुक भगवतीनं संयुक्त मण्डलसहितं खने धनंति ध्वजं
 हृदयवीज रश्मिमालायाकं खिचेयाना ज्ञानचक्र आकाशे
 स्वया समुखेत्या पूजायाना समयमण्डले प्रवेशयाये ध
 नंति ज्ञानमण्डलव समयमण्डल छुल्लेखुल भालपा मा
 नसिकयाकं पूजादेवीपिसं पूजायाके ॥ ॥ फें फें फें ॥
 ज्वालासुद्रा क्पने ॥ ॥ अर्घाचन मंत्रः ॥ ॐ श्रीवज्र हे हे रु रु
 क प्रवरसत्काराय पाध्यार्घाचमनं प्रतीच्छ स्वाहा ॥ ॥ जः हं
 वं होः ॥ पुष्यन्यास ॥ ॥ ॐ श्रीवज्र हे हे रु रु क हं हं फट्

डाकिनी जाल सखरं स्वाहा ॥ हृदय ॥ ॐ ह्रीं हह हं फू ॥ उप हृद
 य ॥ ॐ डाकिनी ये हं हं फू ॥ ॐ राम ये हं हं फू ॥ ॐ श्वरपुरो
 हे हं हं फू ॥ ॐ रुचिरा ये हं हं फू ॥ अति पूर्व उजर पश्चि
 म दक्षिणे ॥ ॥ ॐ बोधिचिनामृतभांडे हं हं फू ॥ ॥ इ
 ति विदिग ॥ ॥ ५० ॥ ॐ करु २ प्रवरण ये हं फू ॥ ३० ॥ ॐ कु
 रु २ चणुक्षी ये हं फू ॥ ५० ॐ वध २ प्रभामते हं फू ॥ ६० ॐ
 त्रास २ महानासा ये हं फू ॥ अ० ॐ क्षोभ २ वीरमते हं फू
 ॥ नै० ॥ ॐ ह्रीं हं सर्वरी ये हं फू ॥ वा० ॥ ॐ तं के श्वरी ये हं फू
 ॥ ई० ॥ ॐ फैं फैं कुमद्या ये हं फू ॥ इति चित्तचक्र ॥ ॥ ५० ॥ फू
 २ ऐरावते हं फू ॥ ३० ॥ ॐ दह २ मलमैरये हं फू ॥ ५० ॥ ॐ
 पच २ वायुवेगा ये हं फू ॥ ६० ॥ ॐ भक्ष २ वसरुधिरानमाला व
 तं विनै सुराभक्षिणे हं फू ॥ अ० ॐ गृह २ सप्तपातालगतभु
 जंग सपंवा नर्जय २ शोमा दे वो हं फू ॥ नै० ॥ ॐ आक २ सुभ
 द्रा ये हं फू ॥ वा० ॥ ॐ ह्रीं २ हयकरा ये हं फू ॥ ई० ॥ ॐ ज्ञो २ खगा
 नना ये हं फू ॥ इति वाक्चक्र ॥ ॥ ५० ॥ ॐ क्षो २ चक्रवेगा
 ये हं फू ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं श्वरपुरो हये हं फू ॥ ५० ॥ ॐ ह्रीं २ सौखि
 नी ये हं फू ॥ ६० ॥ ॐ हं २ चक्रवर्मिणे हं फू ॥ अ० ॐ किलि २
 सुवला ये हं फू ॥ नै० ॥ ॐ मिलि २ महावला ये हं फू ॥ वा० ॥ ॐ
 हिति २ चक्रवर्गमे हं फू ॥ ई० ॥ ॐ धिरि २ महावीरा ये हं फू ॥

शतिकायचक्र॥ ५॥ पूर्व॥ ॐ काकास्यायै हं फट् ॥ ३० ॥ ॐ उल्ला
 स्यायै हं फट् ॥ ४॥ ॐ श्वानास्यायै हं फट् ॥ ४० ॥ ॐ श्रुकरास्यायै
 हं फट् ॥ ५० ॥ ॐ यमकायै हं फट् ॥ ५० ॥ ॐ यमदुत्तये हं फट् ॥
 ६० ॥ ॐ यमदंष्ट्रये हं फट् ॥ ६० ॥ ॐ यममपनये हं फट् ॥ द्वारको
 रोयोगिनीमंत्र॥ ४॥ ५० ॥ ॐ कुरुग्रहश्मशानाय स्वाहा ॥ ३० ॥ ॐ
 ग्रहो नश्मशानाय स्वाहा ॥ ४० ॥ ॐ ज्वालांकलश्मशानाय स्वा
 हा ॥ ४० ॥ ॐ कलंकभैरवभीषणश्मशानाय स्वाहा ॥ ५० ॥ ॐ अ
 दहासश्मशानाय स्वाहा ॥ ६० ॥ लक्ष्मीवर्णा ज्वालाश्वनश्मशाना
 य स्वाहा ॥ ७० ॥ ॐ घोराश्वकारश्मशानाय स्वाहा ॥ ८० ॥ ॐ किलि
 किलश्मशानाय स्वाहा ॥ ९० ॥ ॥ पंचोपचारपूजा ॥ षोडशला
 स्या ॥ ॐ वज्रवीरो हं ॥ ॐ वज्रवंशे त्रां ॥ ॐ वज्रमृदंगे हौं ॥ ॐ
 वज्रसुरजे अः ॥ ॐ वज्रलाशे हं ॥ ॐ वज्रमाले त्रां ॥ ॐ वज्रगी
 ते हौं ॥ ॐ वज्रनृत्ते अः ॥ ॐ वज्रपुष्पे हं ॥ ॐ वज्रधूपे त्रां ॥ ॐ व
 ज्रालोके हौं ॥ ॐ वज्रगन्धे अः ॥ ॐ वज्रादर्शने हं ॥ ॐ रसवज्रे
 त्रां ॥ ॐ स्पर्शवज्रे हौं ॥ ॐ धर्मधातुवज्रे अः ॥ परावादनस्तुति
 ॥ ॥ ॐ वज्रसत्त्वसंग्रहात् वज्ररत्नमनुत्तरं वज्रधर्मगायि
 ने वज्रकर्मकुलोद्भवा ॥ ॐ तर्कजश्च हं तर्किराजहो ॥ ॥ स्तुति ॥
 सर्वज्ञज्ञानसंदोहं जगदर्थप्रसाधकं ॥ चिन्नामणिरिवोद्भूतं
 श्रीसम्बरं नमोस्तुते ॥ व्याप्तविश्वमहाज्ञानं सर्वान्मनिसदा

स्थितं॥ कृपा क्रोधं हारौ प्रं श्रीसम्बरं नमोस्तुते॥५॥ सर्वज्ञ
 ज्ञानया समूहजुया जगत्संसारया त हितजीवु कार्यसाध
 नयाना चिन्ता मारि रत्न धं उत्पन्नजुया विज्या कल श्रीसम्ब
 रजान जिनं नमस्कार॥ संसारे व्यापी जुया महाज्ञानं संयुक्त
 जुया सकलया आत्मास सदा सर्वकालं विज्याना कृपा व
 तक्षु क्रोधं संयुक्त जुया विज्या कल श्रीसम्बरया तजिनं
 नमस्कार॥ २॥ मंत्रतर्पण॥ ॐ नमो भगवते वीरवीरेश्वराय
 हं२ फ२॥ ॐ नमः कल्याणि संनिभाय हं२ फ२॥ ॐ जयमकु
 येत्कट भैरवाय हं२ फ२॥ ॐ नमो दंडाकरालोय भीषणामुरवा
 य हं२ फ२॥ ॐ सहस्रभुज भास्वराय हं२ फ२॥ ॐ परशुपाशान्नि
 भूलखड्गधारिणे हं२ फ२॥ ॐ व्याघ्रचर्म मरधराय हं२ फ२
 ॥ ॐ महाधूमाधकारवपुषाय हं२ फ२॥ ५॥ हस्तपूजा॥ वाम
 करमध्ये रक्तपंचदलकमल ध्यात्वा॥ ॥ खड्गताहती न्मा ह
 उगु लांगु पलेस्वा चिन्ता नायाना॥ ॥ पुष्पन्यास॥ ॐ वं वज्र
 वाराय हं२ फ२॥ ॐ हां यां यामिने हं२ फ२॥ ॐ हां मों मोहिने हं२ फ२
 ॥ ॐ हं हां संचारिणे हं२ फ२॥ ॐ हं हं सन्नासिने हं२ फ२॥ ॐ फ
 २२ चण्डिकायै हं२ फ२॥ ॐ हं वज्रसत्वाय स्वाहा॥ ॐ नमो हि वैरो
 चनाय स्वाहा॥ ॐ स्वाहा हं पद्मनभेश्वराय स्वाहा॥ ॐ वो ष हं
 रत्नसंभवाय स्वाहा॥ ॐ हं हं वज्रसूर्याय स्वाहा॥ ॐ फ२२ हं

परमाश्वक्त्राय स्वाहा ॥ करमुदिमध्ये स्थापयित्वा ॥ लाहा
 यादधुसतया ॥ पंचोपचारपूजा ॥ स्तुति ॥ कल्याणप्रभाधिनं
 करज्वालाज्वालावलीरागलखसंगत्रिसुखीमहासुखलता
 बालार्कविभारुणा ॥ सास्त्रीसर्वजगद्धृतोजयपदा श्रीवज्रवा-
 राहिका भावेन प्रणमामि सकुलरपि श्रीवज्रनृत्ये मतं ॥ यामि-
 न्याखलु मोहनी भगवती संचारिणी सर्वदा संत्रासिन्या तथाप
 रासुविमला योगेश्वरी चण्डिका चत्वारो भुजैकस्वाननवराश्या
 मासिता गौरिणी श्यामा धूम्र सधूसरा च सततं वन्दे पदं ताण्ड
 वं ॥ कल्याणकालया अग्निज्वालाभं रश्मिप्रकाशया
 नाविज्या कलखङ्गज्वना स्वपारद्वाद्या महासुखं रसया
 नाविज्या कल नक्तुति निउरेजुया बोस श्रीसूर्यभ्यं त्वांगुवर्षा
 सकलयागुरुजुया जगत्संसार प्राणिगणापि उद्धारयाना
 जययाना विज्या कल सकुलश्रीवज्रनृत्ये प्रकाशजुया-
 विज्या कल श्रीवज्रवाराहीयात जिह्वाभावं नमस्कार ॥ श्रीया
 मिनीदेवी मोहनी संचारिणी संत्रासिनी चण्डिकादेवी
 भगवती निर्मलजुया योगया ईश्वरी जुया विज्या कपिं प्यका
 लाण्डुया भिंयुद्ध पारद्वाला श्याम श्वेत गौर श्याम धूम्र
 धूसरवर्षा जुया ताण्डवपदकया विज्या कपिं देवी पितं स
 दा सर्वकालं जिनं नमस्कार ॥ ॥ देवीगणयात तर्पणा वि

य॥ ॐ नमो भगवत्पै वं वज्र वाराहै हूं हूं फूँ ॥ ॐ नमो भगवत्पै हूं
 यो यामिने अजिते अपराजिते त्रैलोक्यमातरे हूं हूं फूँ ॥ ॐ
 नमो भगवत्पै हूं मौ मोहिने सर्वभूत भयावहे महावज्रे हूं
 हूं फूँ ॥ ॐ नमो हूं वज्रासने अजिते अपराजिते वशं करीने
 त्रिभामिणै हूं हूं फूँ ॥ ॐ नमो हूं शेषशिरोषणि क्रोधनि
 करालिनि हूं हूं फूँ ॥ ॐ नमः संत्रासनि मारणि सुप्रभेदनि
 पराजय हूं हूं फूँ ॥ ॐ नमो जयविजयस्तम्भनिमो हूं हूं फूँ
 ॥ ॐ नमो वज्रिणि वज्रवाराहि महायोगेश्वरि रवगे हूं हूं फूँ
 भगवत्पाचमनमंत्र॥ शताक्षरवेने॥ इति हस्त पूजा॥ ॥
 * ततः पापदेशना॥ कृतकारितमनुमोदितमद्यमखिलं निह
 तदोषाणां प्रतिदेशयामि पुरतः पुनरकरणासम्बरं विदधे
 श्रावकखड्गजिनोत्तमजिनसुतसंभूतानि कुशलानि अ
 नुमोदितानि बोधो सम्पक् परिणामयाम्येष जिनरत्नादि
 त्रितयं शरणायातोस्मि सर्वभावेन बोधोचितं विदधे अ
 नुत्तरमार्गं तथासेवेति॥ ॥ जिनं यानाशु कृतपितया
 का हर्षमानयानाच्च नाशु संपूर्णा पाप धनियादि न स
 संपूर्णा दोषनाशयाना विज्या कर्षिणि ह्योने अशु पापदेशना
 याय हानं अशु पापस चले मया यशु सम्बरधारणायाये
 श्रावक प्रत्येकबुद्ध तथागत बोधिसत्वपिनियाकम् उ

नानि जगुः पुराणानामोदना बोधिज्ञानलायत भिन्नं कं परि
 णामनायाये धुपि बुद्धधर्मसंघमाके संपूर्णभावांजि
 शरणावने बोधिज्ञानलाययुती चित्ततये अनुत्तरमा
 र्गसंजिनं सेवायाय जुता ॥ इति आदियोगप्रथम
 समाधि ॥ ॥ तदनु मैत्री करुणा मुदितोपेक्षा चतुर्ब्र
 ह्मविहारविभाव्य ॥ ॥ धनंति मैत्री करुणा मुदिता उ
 पेक्षा चतुर्ब्रह्मविहार कल्पनायाये ॥ ॥ स्वभावशु
 द्धा सर्वधर्माणां स्वभावशुद्धाहं शून्यताज्ञानवज्र स्वभावा
 त्मकोहं ॥ ॥ चित्तमात्रं तु वैति षेत् बोधिसंभारपुराणा
 त् ॥ ततः प्रणिधानवशात् शून्यतातः प्रतिबुधात् ॥ ॥
 चित्तमात्रकल्पनायाना बोधिसंभारपुराणा हानं प्रणि
 धानयावशं शून्यतायाकं विमृजेजुया ॥ ॥ यंकारेण
 वायुमण्डलं नीलं धन्वाभं ध्वजांकितं ॥ तदुपरि रंकारेण अ
 ग्निमण्डलं रक्तं त्रिकोणां ॥ तदुपरि वैकारेण वरुणमण्डलं
 वर्तुलं श्वेतघण्टाङ्कितं ॥ तदुपरि लंकारेण पृथ्वीमण्डलं च
 तुरस्रं पीतं कोशेषु त्रिसृचक्रवज्रांकितं ॥ तदुपरि सुंकारेण
 सुमेरुं चतुरस्रं अष्टभुजं गोपशोभितं ॥ तदुपरि अंकारेण
 रूपगारं चतुरस्रं चतुर्द्वारं चतुस्तारशोभितं महामोक्ष
 पुरवैरोचनस्वभावं हाराई हारवज्रलिक कर्मशीर्षपर्य

नं॥ तडपरि पेंकारे रा विश्वदलपम तन्मधे हेंकारे रा विश्वव
 ज तन्मधे पेंकारे रा विश्वपमाष्टदलं तडपरि आलिकालि
 द्विगुरोन चन्द्रमण्डलं सूर्यमण्डलं च तयोर्मध्ये आकाशस्थं
 हेंकारस्फुरणं संहरणात्मकं तत्सर्वपरिणतं आराधयेयं मण्ड
 लस्थं श्री हेरुकसमाणुलेयमात्मानं भावयेत् ॥ ॥
 येंकाररां वायुमण्डल उत्पत्तिजुल नीलवर्णं धनुकुवांलू
 धजायाचिहूड ॥ ध्यांयवने रेंकारनं अग्निमण्डल रक्तव
 र्णं स्वकुंला ॥ ध्यांयवने वेंकारनं आपमण्डल गुलिच्चा
 तुष्टवर्णं द्यरायाचिहूड ॥ ध्यांयवने लेंकारनं पृथ्वीमण्ड
 लं प्यकुंला सासुवर्णं कुनेरत्रिसृचिकवज्रयाचिहूड ॥
 ध्यांयवने सुंकारनं सुमेरुपर्वतं प्यकुंला आसिलिंदया
 शोभादयाचंग ॥ ध्यांयवने भ्रेंकाररां कूपगार प्यकुं
 ला प्यंगुद्वार प्यंगु तोरणादया शोभालानाचन महामो
 क्षपुर वैरोचनयास्वभाव हार मुतिमा अर्द्धहार मुतिमा
 लायाविशेष आपातं लक्षणायाचिहू कोसिमो थ्यंक द
 याचंग ॥ ध्यांयवने पेंकाररां विश्वपम ध्यामधे हें
 कारनं विश्ववज्र ध्यामधे पेंकारनं विश्वपम आहूडयुं
 ध्याचे आलिकालिभुके चन्द्रमण्डल सूर्यमण्डल ध
 यामधे आकाशेचंग हेंकारस्फुरणं संहरणं गुया धमं

पूरापरिणतजुया मणुलेविज्याकस श्रीहेरुक्का आदि स
कलमणुलयादेवताया आत्मा भावनायाये ॥

तत्रात्मानं कृष्णं चतुर्मुखं मूलमुखं कृष्णं वामेश्यामं पश्चि
मेरुक्तं दक्षिणोपीतं विद्वत्ताननं दंष्ट्रोत्कटभीषणं प्रतिमुखं
रक्तवर्तुलत्रिनेत्रं विश्ववज्रांकितमौलिनं जयमकुटिनं वा
मेवलितार्धचन्द्रधारिणं दक्षिणेश्वरमुखं वज्रमातायंभि
नपंचकपालधारिणं द्वादशभुजं आलिंगनभुजद्वयेन व
ज्रवज्रघण्टाधरं द्वितीयभुजद्वयेन गजचर्माम्बरधरं तृतीय
भुजद्वयेन डमरुखट्वांगधरं चतुर्थभुजद्वयेन करतिरक्त
पूर्णकपालधरं पंचमभुजद्वयेन परशुपाशाधरं षष्ठभु
जद्वयेन त्रिशूलशिरधरं शतार्धनरशिरमालाधारि
णं व्याघ्रचर्मनिवासनं शृंगारवीरवीभत्सरोद्रहास्यभ
यानककरुणाद्रुतशान्तिनवनाद्यरसान्वितं करिणं कुरु
लकेयूरशिरोमणि यज्ञोपवीतभस्मश्वेति षण्मुद्रा मुद्रि
तरविमणुले वामदक्षिणभागे पतितभैरवकातिरात्रीः
वामकर्णासनसुगलयोः आलीयसनस्थितं भगवन्तं भा
वयेत् ॥ श्रीहेरुक्का आत्मा कृष्णवर्णा पद्मारखा
मूलगुखा कृष्णवर्णा देवास वाउं वर्णा लिउने त्याउं वर्णा
जवे ह्यासुवर्णा वाकूद्धिना विकारजूगतिं ग्यानापुण्यमूर्ति

स्वापतिकं ह्यंगु गुह्यचिंशु स्वंगमिखा विश्ववज्रयाचि
 ह्रुशिरे जयमकुं पुया देपा पारेव अर्धचन्द्र जवे कवं
 छौ वज्रमालागठिहि ना न्याग कवछौ कपाले भारणाया
 नाविज्याकल हिनि कालाहा मूलगुनिका लाहाति श्री व
 ज्रवाराही आलिंगनाया न वज्रघण्टज्वना विज्यात निकागु
 लाहानिकां किमि छंगु ज्वना विज्यात स्वकागु लाहानिकां
 डव २ खडांग ज्वना विज्यात प्यकागु लाहानिकां कर नि
 हिंपुरेजू गु पात्रज्वना विज्यात न्याकागु निका लाहात पा
 खिप धरेयाना विज्यात पुकागु निका लाहात त्रिभूर ब्रह्म
 शिर ज्वना विज्यात नेम ५० नरशिरमातां कखाया धुंया
 छंगुलिंनया भंगार १ वीर २ वीभत्स ३ रौद्र ४ हास्य ५ भ
 यानक ६ करुणा ७ अद्भुत ८ शान्ति ९ नवनाम रस सं
 युक्तयाना कशिष्ठ १ कुण्डल २ केयूर ३ शिरोमणि ४ यज्ञोप
 वीत ५ भस्म ६ तुलि खुग मुद्रांतिया सूर्यमण्डले खवे
 जवे भैरव कालिरात्रीया देपागु ह्यपं स्तनमण्डल या
 दधूर्द्धुया आलीरुपदकया विज्याकल श्रीभगवान् या
 त भावनायाये ॥ ॥ भगवती वज्रवाराही रक्तवर्णा मुक्त
 केशा त्रिनेत्रा एकवक्त्रा दिगम्बरा खण्डमण्डितकतिमेखलादि
 भुजा वामभुजेन रक्तपूरोकपालधरा दक्षिणाभुजेन डवतर्ज

निकर्तिका श्रवदुधिरानना जंघाद्येन भगवन्तं समायुह्यात्
 रागयतीं भगवती भावयेत् ॥ ॥ भगवती श्रीवज्रवारी हार
 क्तवर्णा सैखरेयाना स्वंगमिरादना छपाखा जुया विज्या
 कल दिगंबर कुचा २ हनायु जमीनं त्रिया विज्याक निकाला
 हा देपायुलाहानं हिं धूर्तायु पात्रज्वना जवयुलाहानं उष्ट
 यात त्रासवियत कर्तिज्वना श्रीहेरु कयात आतिंगनायाना
 महासुखं विज्याकल भगवतीयात भावनायाये ॥ ॥
 ततः समयचक्रेऽभ्यनरे अक्षरोत्पन्न विश्वाष्टदल कमल
 स्वरूपं माहे न्दमण्डलाखुरं विश्ववर्णात्रिचक्रीरूपं श्रीका
 राधिष्ठितं रत्नावनिपरिवृतं महासुखकायात्मकं चिन्ता
 क् कायस्वभावं भावयेत् ॥ ॥ भनंति समयचक्रे उने ॐ
 आः हूं स्वंग आखलं उत्पन्न जुयाचंगु विश्वपद्म आह उगु
 पलेसां स्वरूप पृथ्वीमण्डले आरुरुयानाचंगु नानाप्रका
 रयावर्णा काय वाक्चिन्ता स्वंगुचक्रयास्वरूप श्रीकारे
 अधिष्ठानयानाचंगु रत्नया माता चाउलाचंगु महासुख
 कायया आत्माजुयाचंगु काय वाक् चिन्ता स्वभावजुया
 चंगु भावनायाये ॥ ॥ तत्र पूर्वडाकिनी नीला उत्तर प
 त्रे रामा हरिता पश्चिम पत्रे खण्डोरोहा रक्ता दक्षिण पत्रे
 रूपिणी पीता ताः सर्वाः शिवारूपसंस्थिता एकवक्त्राश्च

वृक्षजा नो मेक पात खदांग दक्षिरोडमरु कर्तिका दंडाकरा
 लवदनाः त्रिनेत्राः पंचमुद्रा विभूषिताः ॥ ॥ धसमयचक्रे च्याह
 पल्पस्त्रायामभे पूर्वयाउहले नोलवरीस डाकिनी देवी ॥ ३
 नरपत्रे हरितवरीस रामा देवी ॥ पश्चिमपत्रे रक्तवरीस खण्ड
 रोहा देवी ॥ दक्षिणपत्रे पीतवरीस रूपिणी देवी ॥ ५ पिसकल्पं
 प्रेतासनयानांचपिं सुपाखा प्पकाता ह्यु देपालाहानिका नं
 पात्र व खदांगज्वना जवेनिकाताहानं दव २ व कर्तिज्वना
 चंपिं वा कूछिना ग्याना पुगुखा जुयाचंपिं संगमिखा संपिजे
 याना पंचमुद्रां त्रिया विज्या कपिं ॥ विदिग्दलेषु चत्वारि
 बोधिचिन्तामृतपूरणं कपालिनी ॥ ॥ कुनेश्चंयु हले प्पखेसं
 पंग बोधिचिन्तामृतं पुरेजुयाचंयु पात्र ॥ ॥ तद्वहचिन्त
 चक्रे हंकारजं अष्टारं आपमणुलारुं कल्पहेकाराधिष्ठितं
 वज्रावलिपरि वृतं धर्मकायात्मकं स्वर्गरूपं खेचरीस्वभावं चि
 नयेत् ॥ ॥ धं पिने चिन्तचक्रहंकारं उत्पत्तिजुयाचंयु
 चाचोत् आपमणुले आरुयानाचंयु कल्पवरी हेकारे
 अधिष्ठानयानाचंयु वज्रावलिचाउलाचंयु धर्मकायआत्मा
 स्वर्गरूप आकाशे चलेजीगुस्वभावजुयाचंयु चिन्ता यपि
 ॥ ॥ तत्र पुंजे पूर्वा रे सुलीलमतये खण्डपात प्रचण्डा
 देवी ॥ जौजे उत्तराले जालंधरे महाकंकात चण्डाक्षी ॥ ओं जे प

श्वित्तारे ओडियाने कंकालप्रभामती॥ ओं जे दक्षिणारे आ
 र्बुदे विकटदंष्ट्री महानासा॥ इति प्रथममुदिताभूमिदानपा
 रमिता दुःखज्ञान॥ ॥ गौं जे आग्नेयारे गोडावर्या सुरावेदि
 वीरमती॥ रां जे नैऋत्यारे रामेश्वर्या अमिताभखर्वरी॥ दें जे वा
 युधारे देवीकोटे वज्रप्रभलंकेश्वरी॥ मां जे ईशानारे मालवे
 वज्रदेहकुमच्छाया॥ इति उपपीठविमलाभूमिशीतपारमि
 तासमुदयज्ञान॥ इति चित्तचक्र॥ ॥ ५७ चित्तचक्रे पूर्वया
 चोले खण्डपालदेव प्रचण्डदेवी पुल्लोलमलयपीठसुवी
 जं उत्पत्तिजुयाचंगु॥ जां वीजं उत्पत्तिजुयाचंगु उत्तरयाचो
 ले जालंधर महाकंकालदेव चण्डाक्षीदेवी॥ ओं वीजं उत्पत्ति
 जुयाचंगु पश्चिमयाचोते ओडियाने कंकालदेव प्रभामती
 देवी॥ ओं वीजं उत्पत्तिजुयाचंगु दक्षिणयाचोते आर्बुदे विक
 टदंष्ट्रीदेव महानासादेवी॥ ॥ इति मुदिताभूमिदानपारमिता
 दुःखज्ञान॥ ॥ गौं वीजं उत्पत्तिजुयाचंगु अग्नेकोशे गोडावरी
 सुरावीरदेव वीरमतीदेवी॥ रां वीजं उत्पत्तिजुयाचंगु नैऋत्यको
 शे रामेश्वरी अमिताभदेव खर्वरीदेवी॥ दें वीजं उत्पत्तिजुयाचं
 गुदेवीकोटे वायुव्यकुने वज्रप्रभदेव लंकेश्वरीदेवी॥ मां वी
 जं उत्पत्तिजुयाचंगु ईशानकुने मालवे वज्रदेहदेव कुमच्छा
 यादेवी॥ ॥ इति उपपीठविमलाभूमिशीतपारमितासमुद

यज्ञान॥ ॥धुलिचित्रचक्र॥ ॥ततः सोहिवाक्चक्रे आ
 कारनिर्जातं अष्टारं तेजोमण्डलारूढं रूपाधि स्थितं रक्त
 पद्मावलिपरिवृतं संभोगकायात्मकं मर्त्यस्वभावं भूचरि
 स्वभावं चिन्तयेत्॥ ॥तत्र कौंजे पूर्वादे कामरूपे अंकुः
 लिङ्गदेरावती॥ औं जे उत्तरादे ओम्ने वज्रजटिलमहाभैरवा
 ॥ इति क्षेत्रप्रभाकराभूमिस्थानि पारमिता निरोधज्ञान॥ त्रिं
 जे पश्चिमादे त्रिशकुनी महावीर वायुवेगा॥ कौंजे दक्षिणादे
 कोशलायां वज्रहंकार सुराभक्षी॥ इति उपक्षेत्र अर्चिष्मती
 भूमि वीर्यपारमिता मार्गज्ञान॥ कौंजे अग्नेयारे कलिंगे सुभद्रा
 श्यामा देवी॥ लंजे नैऋत्यादे लंपाके वज्रप्रभ सुभद्रा॥ इति छ
 द्माह अभिमुखी भूमि ध्यान पारमिता क्षयज्ञान॥ कौंजे वायुव्या
 दे कौंजं महाभैरव ह्यकर्णा॥ हिंजे ऐशानारे हिमालये वि
 रूपाक्षखगानना॥ इति उपछन्दोह सुउर्जया भूमिप्रज्ञा पार
 मिता अलत्यादज्ञान॥ इति वाक्चक्र॥ ॥धनं लिवाक्चक्र
 आकारं उत्पत्तिजुयाचंशु च्चात्रेउ तेजमण्डले आरूढयाना
 चंशु रूपादे अविष्टानयानाचंशु ह्याउं पद्मावलिचाउला
 चंशु संभोगकायात्मा मर्त्यमण्डलस्वभाव भूमीचलेजी
 गुस्वभावचिन्तनायाये॥ ॥ध वाक्चक्रैः पूर्वयाचते का
 वीजं उत्पत्तिजुयाचंशु कामरूपे अंकुलिङ्गदेव ऐरावती देवी

ओंकारं उत्पत्तिजगु उत्तर्याचने ओम् वज्रजटिलदेव महामै
 रवा देवी ॥ भुलिक्षेत्र प्रभाकरीभूमि क्षान्तिपारमिता निरोध
 ज्ञान ॥ त्रिकारं उत्पत्तिजुयाचंगुः त्रिशक्ती महावीरदेव वा
 युवेगा देवी ॥ कौंवीजं उत्पत्तिजुयाचंगुः दक्षिणयाचने कोश
 लास वज्रहंकार देव सुराभक्षी देवी ॥ इति भुलि उपक्षेत्र अर्चि
 ष्मतीभूमि वीर्यपारमिता मार्गज्ञान ॥ ॥ कौंवीजं उत्पत्तिजुया
 चंगुः अग्निकुने कर्मिणे सुभद्रा देव श्यामा देवी ॥ लंकारं उत्प
 त्तिजुयाचंगुः नैर्ऋत्यकोरो लंपाके वज्रप्रभदेव सुमद्रा देवी
 भुलि छन्दोह अभिमुखीभूमि ध्यानपारमिता क्षयज्ञान ॥ कौं
 वीजं उत्पत्तिजगु वायुमकोरो कौंचीस महाभैरवदेव हय
 कर्णा देवी ॥ हिंवीजं उत्पत्तिजगु ऐशानयाकोरो हिमालये
 विरूपाक्षदेव खगानना देवी ॥ भुलि उपछन्दोह सुहर्जया
 भूमि प्रज्ञापारमिता अनुत्पादज्ञान ॥ भुलिवाक्चक्र ॥ ॥
 नतो वायुकायचक्रे ओंकारं अष्टारं वायुमण्डलासूतं शु
 क्तककाराधिष्ठितं चक्रावलि समलंकृतं निर्माणा कायात्म
 क पातालस्य भावं पातालवासिनीस्वरूपं भावयेत् ॥
 धंदिने कायचक्र ओंकारं उत्पत्तिजगु चाचोल् वायुमण्ड
 ले आरूढयानाचंगु त्रयुग ककारे अधिष्ठानयानाचंगुः
 चक्रावलिं चाउलाचंगु निर्माणा काय आत्मा पातालस्य भाव

पातालवासिनीया स्वरूप चिन्तायाये॥ ॥ तत्र प्रेजे
 वीरे प्रेतपुर्यां महाबलचक्रवेगा॥ गुंजे उत्तरारे गुरुदेवताया
 रत्नवज्रखण्डरोहा॥ इतिमेलापक उरंगमाभूमि उपायपारमिता
 धर्मज्ञान॥ सौंजे पश्चिमारे सौराष्ट्र ह्यग्रीव सौरिणी॥ सुंजे
 दक्षिणारे सुवर्गादीपे आकाशगर्भचक्रवर्तिणी॥ इतिउपमे
 लापक अचलाभूमि प्रणिधि पारमिता न्ययज्ञान॥ नैजे अग्ने
 यारे नगरे श्रीहेरुक सुवीरं॥ सिंजे नैऋत्यारे सिंधौ पद्म
 नेश्वर महाबला॥ इतिश्मशान साधुमतीभूमि बलपारमिता
 संवत्तिज्ञान॥ मंजे वायुवारे मल्लो वैरोचन चक्रवर्तिनी॥ कुंजे
 ऐशानारे कुलताया वज्रसत्त्व महावीर्याभावयेत्॥ इतिउप
 श्मशाने धर्ममेधाभूमि ज्ञानपारमिता परचिन्ताज्ञान॥ ॥
 पुंजे प्रेतीजं उत्पत्तिजुयाचं गु पर्वयाचते प्रेतपुरीस महा
 बलदेव चक्रवेगादेवी॥ गुंवीजं उत्पत्तिजुय उत्तरयाचते गु
 रुदेवतास रत्नवज्रदेव खण्डरोहादेवी॥ थुलिमेलापक उ
 रंगमाभूमि उपायपारमिता धर्मज्ञान॥ सौंवीजं उत्पत्तिजु
 य पश्चिमयाचते सौराष्ट्र ह्यग्रीवदेव सौरिणीदेवी॥ सुं
 वीजं उत्पत्तिजुय दक्षिणयाचते सुवर्गादीपे आकाशगर्भ
 देव चक्रवर्तिणीदेवी॥ थुलि उपमेलापक अचलाभूमि प्र
 णिधि पारमिता अन्वयज्ञान॥ नैवीजं उत्पत्तिजुय अग्नेकुने

नगरे श्रीरुरुकदेवः सुवीरादेवी॥ सैवीजं उत्पत्तिज्जु नैर्ऋत्य
 पाचते सिंधुसः पद्मनृत्येश्वरदेवः महाबलादेवी॥ भुलिश्मशानः सा
 धुमतीभूमिः वलपारमिता संवृत्तिज्ञान॥ सैवीजं उत्पत्तिज्जु वा
 युयथाचते मरुसः वैरोचनदेवः चक्रवर्तिनीदेवी॥ कंवीजं उत्प
 त्तिज्जु ईशानयाचते वज्रसत्त्वदेवः महावीर्यादेवी चिन्तनाया
 ये॥ भुलि उपश्मशानः धर्ममेधाभूमिः ज्ञानपारमिता परचिन्त
 ज्ञाना॥ ॥ इति कायचक्रा॥ ॥ खण्डकपालादयो वी

राः एकवक्त्राश्चतुर्भुजास्त्रिनेत्रा जयमकुटिनः आलिंगनभु
 जद्वयेन वज्रवज्रधारणधरं अपरभुजद्वयेन उमरुखट्वांग
 धरं पंचमुद्राविभूषिता आलीगलनस्थिताः॥ ॥ ध्वत्रि

चक्रे चंपिं खण्डकपालादिं वीरगणपिं दूपाखाः संगमि
 खाः जयमकुटं पुयाविज्याकः निष्कालाहंतं देवी आलिंगन
 याना वज्रधारज्वना विज्याकः निष्कालाहंतं उमरुखट्वांगज्व
 ना पंचमुद्रांतिया आलीगलनस्थिताः॥ ॥ प्रचण्ड

यादेवः एकवक्त्रा द्विभुजा आलिंगनकपालहस्ता दक्षिणे
 कर्तिकाः त्रिनेत्रा रौद्ररूपिणी मुक्तकेशा अक्षययोगसमापन्ना
 महारागानुरागिनादिगन्धरा पंचमुद्राविभूषिताः॥ ॥

प्रचण्डादिं देवीगणपिं दूपाखाः निष्कालाहः आलिंगना
 याना खट्वाहंतं पात्रज्वना ज्वलाहंतं करतिज्वना स्वंगा

भिरवाकना भयंकररूप सैं छरेयाना निहभेदमउगु योगंसं
 युक्तयाना महारागसरनियाना दिगम्बरजुया पंचमुद्रांति
 याविज्याकल ॥ ॥ नतः पूर्व द्वारे काकास्या नीला उत्तरद्वारे
 रे उत्तरकास्या हरिता पश्चिमद्वारे श्वाना स्या रक्ता दक्षिणाद्वारे
 श्रुकरा स्या पीता अग्नेकोरो यमदायी नीलपीता नैऋत्यको
 रो यमहृती पीतरक्ता वायुकोरो यमदंष्ट्री रक्तश्यामा ई
 शानकोरो यममथनी श्याम कृष्णा भावयेत् ॥ ॥ भनन्ति
 पूर्वयाद्वारे काकास्या देवी नीलवर्णा उत्तरयाद्वारे उत्तरका
 स्या देवी वाउँ वर्णा पश्चिमयाद्वारे श्वाना स्या देवी स्याउँ वर्णा
 दक्षिणायाद्वारे श्रुकरा स्या देवी स्या सुवर्णा अग्निकुने यमदा
 यी देवी हाकुवद्धि स्या सुवद्धि वर्णा नैऋत्यकुने यमहृती
 देवी स्या सुवद्धि स्याउँवद्धि वर्णा वायुकोरो यमदंष्ट्री दे
 वी स्याउँवद्धि वाउँवद्धि वर्णा ईशानकुने यममथनी देवी
 वाउँवद्धि हाकुवद्धि वर्णा चिन्तनायाये ॥ ॥ एता योगि
 न्यः एकवक्त्रा श्वतुर्भुजा मुक्तकेशा शवासना दिगम्बरा
 पंचमुद्राविभूषिता कपालखट्वांगवामंच दक्षिरो डम
 रुकर्त्तिका दंष्ट्राकरालवदनां विभाव ॥ ॥ धुपिं
 देवीगरापिं दूपाखा प्यकाताह सैं फिजेयाना प्रेत
 आसनयाना दिगम्बरजुया पंचमुद्रांतिया देपागुनि

कालाहानं पात्रं व. खड्गं गज्वना. ज. वरु निष्कालाहानं. दव
 दव. व. कर्तिज्वना. वाक्कुछिना भयानकमूर्तिजुया विज्याधि
 चिन्तनायाये ॥ ॥ ॐ आ. हं शुक्ल रक्त हृद्यवर्णा. शिर
 कष्ट हृदयेषु विभाव्य ॥ स्वर्गमध्य पाताल एकमूर्तिभवेत्
 क्षणात् ॥ ॥ धन. धनगुशिरे त्रयूगु ॐ कार. करेष्ट ह्यउ
 गु. आ. कार. हृदये. नील हंकार चन. स्वर्गमध्य पाताल दे
 गुमूर्तिजुगु क्षणमात्रं भावनायाये ॥ ॥ धनंति. ह्य
 पाथं. षडङ्ग न्यासयाये ॥ ॥ ॐ आ. हं सर्ववीरयोगिनी
 कायवाक् चित्तवज्र स्वभावान्मकोऽहं ॥ ॐ वज्रशुद्धा. सर्वध
 र्माणां वज्रशुद्धोहं ॥ ॥ धृतिमंत्रवोने ॥ ॥ समानीतज्ञा
 नचक्रमाकाशदेहो दृष्ट्वा. जः हूं वै होः ॥ आत्मनि मण्डलेषु
 चाक्षय ॥ ॥ धनंति चैकनां गु. ध्यानवना. ज्ञानचक्र आ
 काशे स्वया. जः हूं वै होः धृतिमंत्रं धनगु शरीरे आकर्ष
 णायाना. प्रवेशयाना भवहे श्रीहे रुजुल धनके ज मां
 मण्डल खाराजुलधका. चिन्तनायाये ॥ ॥ योगशुद्धा.
 सर्वधर्मा योगशुद्धोहं ॥ ॥ धृतिमंत्रवोने ॥ ॥ तदनुः ॥
 धनंति ॥ ॥ अभिषिंचितुमां ॥ सर्ववीरयोगिनी श्रीहेरु
 कवज्रस्वभावान्मकोहं ॥ यथाहि जातमात्रेण स्नायिता
 सर्वतथागताः ॥ तथाहं स्नापयिष्यामि शुद्धं दिवेनवारिणा

ॐ आः हं सर्वतथागत अभिषेकसमय भ्रिये हं ॥ अणि
 धेककाये ॥ अभिषेकमहावज्रं त्रैधातुकनमस्कृतं ॥ ददामि
 सर्वबुद्धानां त्रिगुणालयसंभवं ॥ ॥ धनमकुटभावना ॥
 इदं तत्सर्वबुद्धानां त्रैधातुकनमस्कृतं ॥ पुष्पांकं पूजनार्थाय मकु
 टपंचकुलोद्भव ॥ ॐ सर्वबुद्धचूडामणिमहामकुटं प्रतीच्छ स्वा
 हा ॥ ॥ मध्ये ॥ ॐ वज्रधातेश्वरी अभिषिचं ॥ १० ॥ ॐ व
 ज्रवज्रिणी अभिषिचं ॥ २० ॥ ॐ रत्नवज्रिणी अभिषिचं ॥ ३० ॥
 ॐ धर्मवज्रिणी अभिषिचं ॥ ४० ॥ ॐ कर्मवज्रिणी अभिषि
 चं ॥ ५० ॥ ॥ इति मकुट ॥ ॥ अथाभिषिक्तत्वमसि बुद्धे
 र्वज्राभिषेकतः ॥ इदं तत्सर्वबुद्धत्वं गृह्यत्वमसि बुद्धये ॥ ॥
 वज्र ॥ ॥ ॐ वज्राधिपतिस्त्वामभिषिचामि स्निग्धवज्रसमय
 स्तं होः वज्रयण अअ ॥ ॥ घण्टा ॥ ॥ ॐ वज्रसत्त्वस्त्वामभि
 षिचामि वज्रनामाभिषेकतः ॥ ॐ श्रीहेरुक्कनामतथागस्तं भूर्भु
 वः स्वः ॥ ॥ नाम ॥ ॥ धनंति मकुटपूजायाये धवगुशि
 रे पंचबुद्धस्वरूपनं ॥ पा. पु. पं. रा. सुति ॥ ॥ पुनः
 आकर्षण ॥ ॥ धनंति हानं चैकनागु ध्यानवना मण्डल
 सहितं श्रीहेरुक्क वज्रवाराही आकर्षणायाना आकाशे वि
 ज्याका पादार्घ्यपंचोपचारपूजायाना जः हं वं होः धुतिमं
 त्रयोना समयमण्डले प्रवेशयाना स्वाद्वय ॥ ॥ चैकनाथं

वज्रजनाद्यगुपाये ॥ ॐ वज्रसत्त्वसंग्रहात् वज्ररत्नमनुत्तर वज्रधर्मगायिने वज्र
 कर्मकुलोद्भव ॥ ॐ इति जहं रत्नं किं रत्नं होः ॥ ॥ आलिङ्गनमुद्रा ॥ ॐ श्रीहेरुक्क
 कवचं स्वभावात्मकोऽहं ॥ ४ ॥

पंचोपचार पूजा तास्या स्तुति ॥ श्रीचक्रसम्बरसुसम्बर
वज्रडाकं वीरेश्वरी प्रवर वीरगणाधिराजं ॥ कोलानना ललित
वाङ्मयगो पङ्कटं कारुण्यनिर्भरं नमामि तवाङ्घ्रि पद्मं ॥ यो मे कल
भ्यः भववन्धन भेदकारी विस्फारितैर्बुध परिशुद्ध शरीरसारः
प्रध्वस्त दोष उरिता मल बोध रूपं संपूज्य नोमि तव पादसरोज
रेणुं ॥

॥ श्रीचक्रसम्बर उत्तमसम्बर वज्रडाक नाम तथा
गत उत्तम वीरेश्वर वीरेश्वरी गणाया राजा जुया विज्या कल
श्रीवज्रवाराहीया सुन्दरु ताहानिकां द्यस पुका विज्या कल
रुणाया खानि जुया विज्या कल छलपोलया चरणा कमल
सजिनं नमस्कार ॥ उत्तमगुयोगयाना संसारयागुवन्धनं छु
तेयाना विज्या कल सकल बुद्धगणाधिं प्रकाशयाना शुद्धनि
र्मलशु शरीर जुया विज्या कल संपूर्ण याप दोष मल यान
नाशयाना मल छुमदयका सकलयात बोधयायगु रूप जु
या विज्या कल थपिल छलपोलया चरणा कमल स पूजाया
ना जिनं नमस्कार याये ॥ तर्पण चेदनागु मंत्रां ॥

इति मण्डलराज श्रीर्नाम समाधिः ॥

ततः आलिकालि पंक्ति पंचरश्मिका स्फुरन् देवतादन्दा उच्चा
रयन् दक्षिण वायु नासानि सृत्य जगन्निचक्रीकृत्य अना
दिसंसिद्धं वीरं वीरगो समरसीम्भवा वामनासाधुटेन प्रवि

इमं नाभौ प्रतिविम्बवत् श्वासाकारचक्रमण्डलीभूतान् विचि
 न्त्वा तत्र ऊटिति शुक्लहंकारं तच्च बीजपरिरातं भगवन्तं सर
 जसम्बरं शुक्लवर्णं मालीयासनस्थं माकाशचित्सदृशं द्विभु
 जं एकवक्त्रं वज्रवज्रधराधरं उभयाभ्यां वज्रकपालधारिणीं
 द्विभुजं एकमुखं रक्तवर्णं वज्रवाराहीमात्मानं विभाव्य ॥ नयो
 र्माया सुरतध्वनिनादघटत्रैधातुकान् चक्रक्रमेण भावयेत्
 जगन्निश्मशानेषु श्मशानानि समयचक्रे समयचक्रं काय
 चक्रे कायचक्रं वाक्चक्रे वाक्चक्रं चित्तचक्रे चित्तचक्रं डा
 किनीषु डाकिन्यादयः यथायथा तेषु बीजेषु भगवन्मुखे
 भगवन्मो द्विभुज तत्प्रज्ञाया प्रतिष्ठाभावनीया ॥ तेषु समयसु
 रतमहाद्रवापत्नेन तद्रवपरिरातं सिन्दूरो रक्ताहारसदृशं हं
 कारं महासुखमयभावयेत् ॥ तत्र उकारे उकारं उकारं हुकारे
 हुकारं शिरसि शिरोर्ध्वचन्द्रे अर्धचन्द्रं विन्दो विरुं नादे ना
 दं च वालाग्रशतसहस्रकोटि भागरूपं चिन्तयेत् ॥ निर्विकल्प
 महासुखमयचित्तनिरूपयेत् ॥ खेदेशे ऊटिति त्रिमण्डलचक्र
 मधिमुच्य ॥ ॥ धनंति आलि कालिया पंक्तिं पंचरश्मिप्र
 काशजुया देवताया समूह उच्चारणायाना जव्रगुह्यसघातं
 वायुपिहं वना जगत्संसार त्रिचक्रयाना अनादि सिद्धजु
 या विज्याकलु वीर वीरेश्वरी नापमिते जुया वया देवागुह्य

सधातुं हं वना नाभीस हस्तनभ्यं श्वासया आकारं चन्द्रम
 शुलजुलधका चिन्तनायाये ॥ धृगुचन्द्रमण्डले पलखनं तुष्ट
 गुरुकारं ध्वजीजपरिणामजुया भगवान्सहजसम्बर तुष्टव
 र्णा आलीठपदकयाविज्याकल आकाश चित् स्वरूप निकाला
 ल छपाखा वज्रघण्टज्वनाविज्याकल श्रीवज्रवाराही छपाखा नि
 कालाहा रक्तवर्णा वज्र कपालधरेयानाविज्याकल चिन्तनायाना
 संपूर्णमण्डल खराजुल भालये ॥ धृपिंनिहस्या मायासुरत श
 दयाकं खिचेयाना त्रैधातुया आत्माजुया चंद्र चक्र क्रमभ्यं
 भावनायाये ॥ नगत्संसारश्मशाने तीनजुल श्मशान समय
 चक्रे तीनजुल समयचक्र कायचक्रे तीनजुल कायचक्र वा
 कचक्रे तीनजुल वाक्चक्र चित्तचक्रे तीनजुल चित्तचक्र
 उक्तिनीगणपिके तीनजुल उक्तिनीगणपि धनंशु बीजे तीन
 जुया भगवान् द्विभुज भगवती श्रीमद्वायाके तीनजुल धका
 चिन्तनायाये ॥ धृपिंनिहसनं समयसुरत महारागयाकं द्रवजु
 या ध्वद्रव परिणामजुया सिंहसंग मुनिभ्यं तुष्ट तुष्ट निगुंग
 या हंकार महासुखमयजुलधका चिन्तनायाये ॥ धनंतिउका
 र उकारे तीनजुल उकार हकारे तीनजुल हकार शिरेली
 नजुल शिर अर्धचक्रे तीनजुल अर्धचन्द्र कृती तीनजु
 ल धकृति नादे तीनजुल धनादशब्द रूंं चिद्विज्या

तापानावना सद्धि वे छवो दीन छि वे छवो लद्धि वे छवो को
 टि वे छवो भागजुया ऊं ता य म द्या वन शून्य जुल भालपे ॥
 निर्विकल्प महसुख मय चित्त जुल भालपे ॥ आकाशेश्वरामा
 त्रनं त्रिमण्डल चक्र खारा जुल भालपे ॥ ॥ धनंति चे कना
 गुण्यं ध्यानयाना आकर्षणा पादार्थ स्वाद्यये पंचोपचार पू
 जा लास्या स्तुति ॥ तर्पणा ॥ ॥ इति मन्त्र योग तृतीय समाधि
 किंचित् सूक्ष्मयोगनाम ॥ ॥ धनंति जापयोग ॥ ॥
 नाभि चन्द्रे स्वेतरक्त हंकारं नादात्मन्त्रमाता उभाय मुखान्निर्गत्य
 स्वनाभौ प्रविश्य वज्रभागे पद्मगृहीत्वा अवधूती मार्गेशोभाय
 भगवती मुखान्नि सृज्य स्वमुखद्वारे प्रविश्य नादे विलीय पुनस्त
 स्मा उभाय सर्वत्र भ्रमनी विभावयेत् ॥ भगवतो भगवत्या मूल
 मन्त्राभ्यां जापयेदिति जापविधिः ॥ ॥ नाभीस चन्द्रमण्डले
 तुष्टुवद्धि सा उवद्धि गुहंकारं नादयाक्यं मन्त्रमाता उभे जुया
 वया सुतुं पिहं वया धं व गु नाभी प्रवेश जुया वज्रया भागं
 पद्मे प्रवेश जुया अवधूती नाडीया मार्गं धं व वया भगवती
 या सुतुं पिहं वया धं व गु सुतुं उहं वना नादे लीन जुया हा
 नं अनं उभे जुया हा पापं संकभनं चाचाउता चं गु चित्तना
 याये ॥ भगवान् भगवतीया मूत्रमन्त्रं जापयाये धुतिजापविधि
 ॥ ॥ धनंति हा मायायं ध्यानवना आकर्षणा पादार्थ उ

ष्यन्वासः पंचोपचार पूजा लास्याः स्तुतिः तर्पणम् ॥

॥ धुनिजापयोगः ॥ ॥ ततो वलिमारुहेत् ॥ ॥ धनंलि

वलि आरंभयामे ॥ ॥ ॥ परतो यैकार वायु मण्डलं नीलं न

उपरि रँकारेण अग्नि मण्डलं रक्तं तत्र शुक्ल आकारपरिण

तं शुक्ल पद्मभाजनं मुद्रात्रितय चूलिकायां व्यवस्थितं पद्मभा

जनं तत्र भक्तादिकं ॥ ॐ आँ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं

त पंचामृत पंचप्रदीप रूपाणि विष्णु वायु प्रेरित ज्वलिताग्नि

तापन बीजाक्षरादिकं अभिनव भाववर्णा इव रूपं दृष्ट्वा तउ प

रिमारुह वर्णा वितस्तिमात्रांतरिता हं भवाधो मुखामृतमयशुक्ल

खट्वांग विलीने सति तद्भव पारद वर्णा शीघ्री भूतं च दृष्ट्वा तउ

परि आलिकालि परिणतं ॐ आँ हं कारेभ्यः अनुक्रमेणा

परिरभ्य चक्र देवता स्फुरिता जगदर्थं कृत्वा सकलामृतस

मानीय समापन्ति पूर्वकं इवीभूय यथा यथा तेषु बीजेषु प्र

तिष्ठाभावनीया ॥ ततः ॐ कारादि क्रमेणा विलीनमवलोक्य

त्रैलोक्येण विष्टाय ततो ज्वाला मुद्रां वद्धा फेंकार पूर्वकं भगव

नस परिवारं आकुर्यात् ॥ ॥ ध्यान ॥ रूपाने नील वर्णा यै

कारनं वायु मण्डल नील वर्णा ध्यायेत् रँकारनं अग्नि मण्डल

स्याउँ वर्णा शुक्ल मण्डल आकार परिणत जुषा तु यूरु पद्म भा

जने स्वर्ग कवक्षोयां अतुली ये तने चंद्र पद्म भाजनं शुक्ल

नयगुसंपूर्णो परिपूर्णो जया चंगु ॥ पुके ॐ आं त्रै खं हं लो मां
 पां तौ वं धुलि बीजाक्षरं उत्पत्तिजगु पंचामृत पंचप्रदीप
 रूप स्वया बायुं प्रेरणाय गतिं जाज्वल्यमानं मिथ्ये गतिं
 बीजाक्षरं संपूर्णो न कतिनिउरे जया बोह श्रीसूर्यं ध्येत्वा
 वरां जया नाया चंगु स्वया ध्याय वने पाताला मावरी वता
 छि चे हंकार बीजं उत्पत्तिजगु कस्वया चंगु अमृतमय
 जया चंगु त्रयगु खकांग लीनजुस्पति धुगु पाहताया
 वरीं शीतल जगु स्वया ध्याय वने आलि कालि परिण
 तजया ॐ आः हं कार या रश्मिया कं क्रमध्वं चक्र देवता
 प्रदत्त जया जगत्संसारया त हितयाना सकलया कर्मानं
 ज्ञानामृत रस कया हया धुगु हे पद्मभां जने तया नाया व
 ना भवश्च हे बीजाक्षरे लीनजुलभा नये ॥ पुके ॐ आः आ
 दिनं क्रमध्वं लीनजगु स्वया ॐ आः हं धुलिमंत्रं बलि
 अधिष्ठानयाना ज्वाला मुद्रा कपना के कार पूर्वकनं चे
 कनागु ध्यान बना भगवान् परिवार सहितं आकर्षणाय
 ये ॥ ॥ चै ध्वं पादार्घ्यं पुष्पन्यास पंचोपचार पूजा लास्या
 स्तुति ॥ तर्पण ॥ x ॥ ततः आलिकालि परिणत चक्रसू
 र्य स्वभाव कर दयाने हंकारं दृष्ट्वा ॥ ॥ धनंलि आलि
 कालि परिणतजगु चक्र सूर्य स्वभाव लाह निपाया द

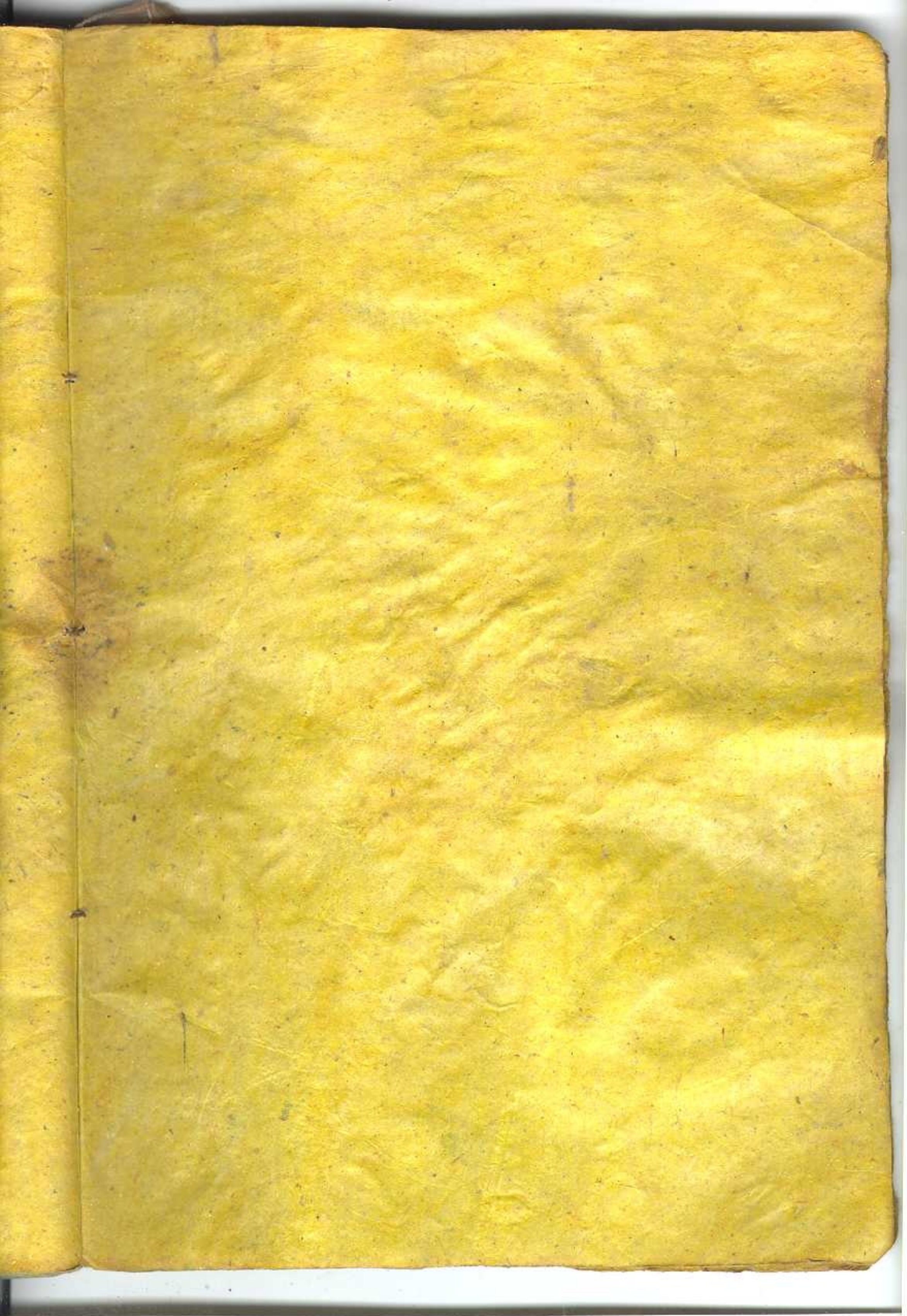
श्री हंकार वीज स्वया ॥ ॥ अन्मो न्या उगताः सर्वधर्माः ॥ ॐ
 परस्परानुगताः सर्वधर्माः ॥ ॐ अत्यन्तानुगता प्रतिष्ठाः सर्वध
 र्माः ॥ ॥ ॥ धृतिमंत्रवने ॥ ॥ चन्द्रसूर्ये लुरुं हंकार परि
 णामेन वज्रांजलि उच्चकृत कर ह यत दमृत भांडानिवस्थाप्य
 ध्यात्वा वा वत्पथि कारार्थमिदं पठेत् ॥ ॥ चन्द्रसूर्ये आरु
 रयाना चंगु धवगुलाह निपास हंकार वीज परिणामजुया
 वज्रांजलि उच्चजुया लाह निपा अमृत भांड ध्यंतया अ
 थवा मनचिन्तनायाना वलि अधिकारया यत ध्वे चयाण
 मंत्रवने ॥ ॥ देवः प्रमारां समथ प्रमारां त उक्त वाच
 श्वपरं प्रमारां ॥ एतेन सत्येन भवेयुरेता देवो ममानुग्रह
 हेतुभूताः ॥ भगवतः हंभव शुक्लजिह्वा विभाव्य ॥ ॐ वज्रां
 जलि जः हं वं होः वज्रं डादिनी समयस्त्वं दृश्य होः ॥ ॥
 भगवतस्तत्प्रज्ञायाः डाकिन्यादीनां काका स्यादीनां च टौक
 येत् ॥ ॥ भगवान् प्रज्ञादेवी डादिनी आदि त्रिचक्रा
 देवता काकाश्या आदियातनं जाकि स्वां मंत्रपात्रे पुना
 खवलाहंतं गंधाना जवलाहंतं वलीहायके ॥ ॥
 मंत्र ॐ कर २ कुरु २ वभ २ त्रासय २ धोभय २ हौं २ हुं २ फैं
 फू २ हुन २ दह २ पच २ भक्ष २ वसरु धिरा न माला वल
 विने ग २ सप्त पातालगत भुजंग सर्व वा तर्जय २ आ

धरं. पिता वराहरनं. ज. जो शिवितं तीने तं जता मुकुतं धारिर्न.
 वज्रसत्त आलंस्तत्र मौरि समया अग्नी विभाव्या वयेहे हिम
 द्युततः देव विहिजस तम दिजाकुवि. महालक्ष्मी सनिहितो नव्य
 साहा॥ इत्यनेन नामा अग्नी मावास्तता॥ ॐ आहुतकी नहुत
 किराजहो॥ कनपुयको वज्राकुसि दियाया॥ निताजिन॥ अग्नि
 दीप दिया विषा विष महासुय द्रव्य कवना हजायह व हुं वंद्यो
 वसमयत्त वज्र तेज आग्नि मयानि विभाव्या॥ ऊरवर पारो ह
 ॐ क मया प्रतिद्व साहा॥ जस्तस. सीखल खनं हाया॥ ॐ अग्नि
 ये प्रवर सत्काराय पावर्षी प्रतिद्व साहा॥ ॐ अग्नि येदिप दिया
 विषा विष महासुय. प्रवर सत्काराय. अर्द्ध आचमनं प्रतिद्व
 साहा॥ जस्त पाखेई पुण्यादि पुजा॥ जस्तस. कल सलं खपं जग
 र्वा नं हाये. स्मान याय. पंचपदार् पुजा. ला ह्या धंठा नाद्व
 सु रि॥ बेल का चक्र मन्त्र॥ ॐ श्री सा रा

35

32



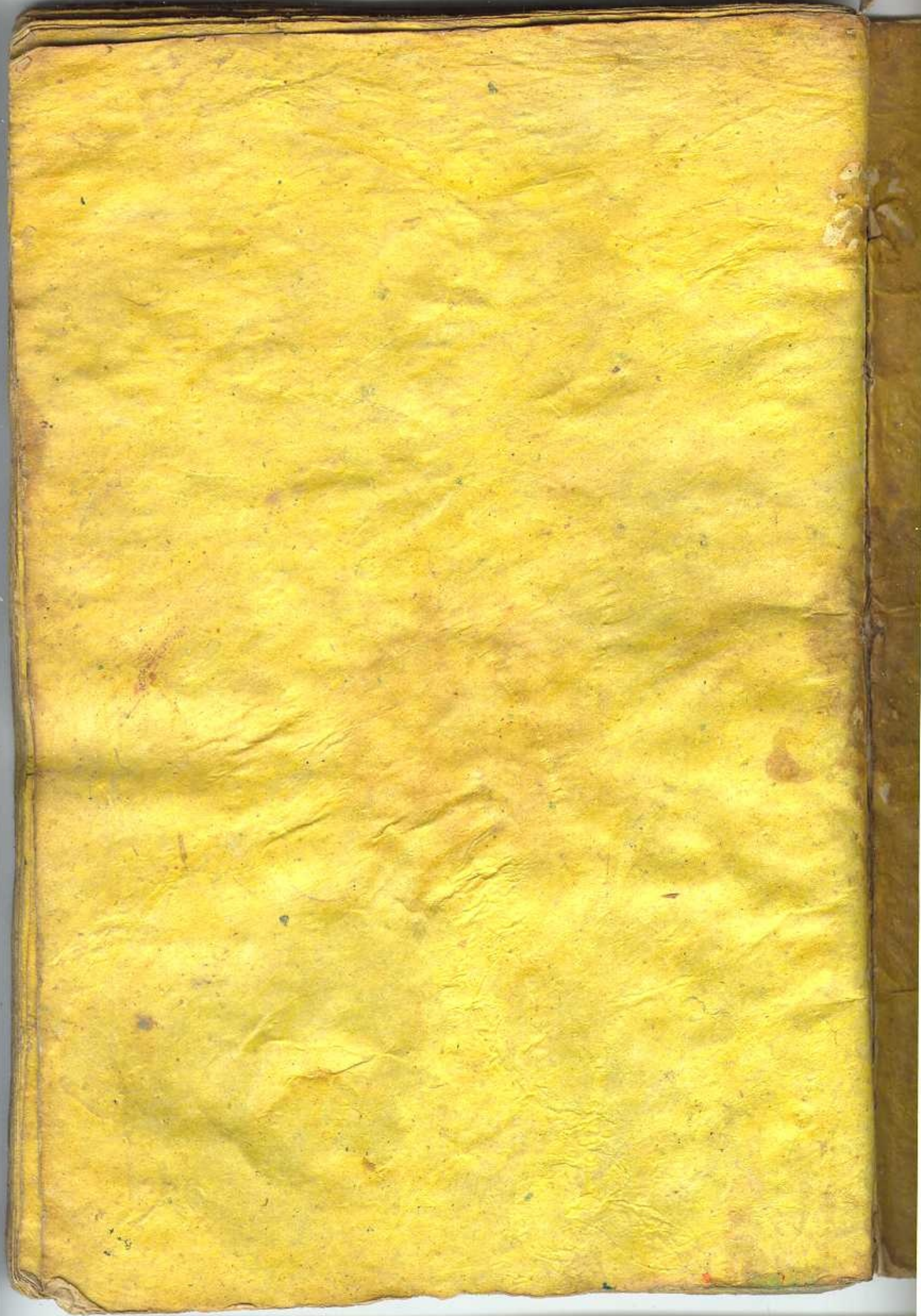












आशा आर्य

618

ASHA ARY

